B.A (I) - Psychology (H)
General Psy.
Paper I

Topic - संवेग में हाइपोथैलेमस की क्रियाएँ (Role of Hypothalamus in Emotions)

शरीरशास्त्रियों (Physiologist) के द्वारा अनुसंधान में पाया गया कि संवेगात्मक व्यवहारों का नियंत्रण का काम हाइपोथैलेमस करता है। मस्तिष्क और मध्यमस्तिष्क के बीच में थैलेमस रहता है जिसको मस्तिष्क का महत्वपूर्ण हिस्सा जो शरीर के सभी भागों से आनेवाली सूचनाएँ को ग्रहण करने का निम्न स्थान है भोजन का कार्य करता है थैलेमस के ठीक नीचे की रचना को उपथैलेमस कहते हैं जो संवेगात्मक अभिव्यक्ति से संबंध रखने वाले मांसपेशियों की क्रियाओं को नियंत्रित करता है तथा हाइपोथैलमस सहानुभूतिक एवं उपसहानुभूतिक स्नायुमंडलों की क्रियाओं को नियंत्रित करने का मुख्य केन्द्र है।

हाइपोथैलेमस का संवेग में कितना महत्वपूर्ण स्थान है इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि जब मस्तिष्क के इस हिस्से में किसी प्रकार की बीमारी (जैसे - ट्यूमर का होना) हो जाती है तब रोगी का संवेगात्मक जीवन पूर्णतया बदल जाती है वह संवेग विहीन या उदासीन बन जाता है कुछ लोगों में नार्कोलिप्सी (Narcolepsy) की अवस्था का विकास

होते भी देखा गया है जिसमें रोगी का नींद पर कोई नियंत्रण नहीं रहता। वह निद्रा रोग से ग्रस्त हो जाता है।

मासरमैन, इग्राम, बैरिस, रैन्सन आदि प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग में पाये जाने वाले डेटा के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि संवेग में हाइपोथैलेमस की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इन अध्ययनों में कुत्ते तथा बिल्लियों के हाइपोथैलेमस को काटकर निकाल देने के बाद देखा कि जब उनके पास संवेग उत्पन्न करने वाली कोई परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तब वे किसी प्रकार का संवेगात्मक व्यवहार नहीं करते। हार्लो एवं स्टैग्नर ने निष्कर्ष रूप में कहा कि विभिन्न संवेगों के प्रदर्शन का प्रतिरूप अलग-अलग व्यक्तियों एवं परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।

कैनन तथा वार्ड ने भी यह स्वीकार किया कि संवेग में हाइपोथैलेमस का महत्व होता है। उन्होंने एक स्वतंत्र सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे Hypothalamic theory कहते हैं।

अतः संवेग में हाइपोथैलेमस का बहुत ही अधिक महत्व है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara